BA Part - II

History Notes

By - Dr. Durga Bhawani

B.A Part II History (Subsidiary)

Page No.:
Date : / /

Q. ~~हैदर अली की जीवनी एवं उनकी उपलब्धियों का वर्णन करें।~~

Ans:- हैदरअली का जन्म 1721 ई० में बुंदीकोट में हुआ था। उसके पिता फतह मुहम्मद मैसूर राज्य की सेनाओं में फौजदार के पद पर था और दादा मुहम्मद अली एक साधारण कृषक था। 1728 ई० में हैदर अली के पिता की मृत्यु हो गयी और इसी कारण से हैदरअली की शिक्षा की व्यवस्था नहीं हो हो सकी और वह अशिक्षित ही रहा। आरंभिक कठिनाइयों के कारण उसमें एक दृढ़ निश्चय, उत्साह तथा आत्म-विश्वास की भावनाएँ आ गयीं। उसने शीघ्र ही मैसूर के प्रधानमंत्री नजराज के यहाँ सैनिक के रूप में नौकरी कर ली। सच तो ये है कि उस समय नजराज ही मैसूर की वास्तविक शक्ति था और मैसूर का शासक तो उसके हाथ की कठपुतली था।

इस समय दक्षिण में कर्नाटक के युद्ध चल रहे थे, जिनसे चारों ओर अशांति व्याप्त थी और इस अशान्ति में हैदरअली को अपनी योग्यता दिखाने का अवसर मिला। 1750 ई० में हैदराबाद के निजाम नासिर जंग की हत्या के उपरान्त मुजफ्फरजंग को नया निजाम बनाया गया। अवसर का लाभ उठाकर हैदरअली ने अपने साथियों की सहायता से मृत नासिरजंग के खजाने की राशि अपने अधिकार में कर ली तथा

इसी धन से हैदर अली ने अनेक साथियों को भर्ती किया तथा उन्हें फ्रांसीसी सेनापतियों से प्रशिक्षित करवाया। 1755 ई० में उसे डिण्डीगाल का फौजदार नियुक्त किया गया, उसने फ्रांसीसी अधिकारियों की देख-रेख में एक तोप खाना भी स्थापित किया।

कुछ समय बाद हैदर अली को मैसूर के प्रधानमंत्री नजराज के साथ त्रिचनापल्ली के घेरे में साथ काम करने का मौका मिला। अभियान में हैदर अली ने अंग्रेजों की एक टुकड़ी से बहुत सी बन्दूकें तथा भारी मात्रा में गोला-बारूद छीन लिया, परिणाम स्वरूप उसकी सैन्य शक्ति में काफी वृद्धि हो गयी अतः अब वह पास-पड़ोस के राज्यों में लूटमार करके धन संग्रह करने लगा। इस कार्य में उसे भारी सफलता मिली और शीघ्र ही उसके पास एक विशाल सेना हो गयी। उसकी बढ़ती हुई शक्ति से प्रभावित होकर मैसूर के राजा ने उसे अपनी सेना में प्रधान सेनापति नियुक्त किया।

1760 ई० में हैदर अली ने प्रधान मंत्री नजराज से मैसूर की सारी शक्ति छीन ली तथा धीरे-धीरे उसने अपने सभी विरोधियों को अपने पक्ष में कर लिया। हैदर अली की इस

अद्भुत कार्य में उस काल की परिस्थितियों ने काफी सहायता पहुँचाई। अंगरेजों और फ्रांसीसियों के युद्धों ने कर्नाटक की समृद्धि का नाश कर दिया। पानीपत के तृतीय युद्ध में मराठे हार चुके थे और हैदराबाद का निजाम भी निर्बल बना हुआ था, अतः हैदरअली की दिन-प्रति-दिन बढ़ती हुई शक्ति पर रोक लगाने के लिए किसी पड़ोसी शक्ति में न तो साहस एवं समर्थ थी और न ही उत्सुकता थी।

राज्य विस्तार – इस प्रकार शक्ति सम्पन्न बन कर हैदरअली ने राज्य विस्तार का कार्य शुरू किया। 1763 ई० में बेदनूर के राजा की मृत्यु हो गयी तथा राजा के मरते ही दो उत्तराधिकारी गद्दी के लिए लड़ने लगे। हैदरअली ने दोनों को पकड़वा कर उनकी हत्या करवा दी और बेदनूर का नाम बदल कर हैदरनगर रख दिया तथा अपने एक विश्वासपात्र को वहाँ नियुक्त कर दिया। हैदरअली ने कोचीन, पालघाट, कालीकट तथा कन्नड़ पर विजय प्राप्त की। मालावार के नायकों का दमन किया, दक्षिण भारत के पोलीगारों को अधीनता स्वीकार करने के लिए विवश किया और सुण्डा, सीरी और गुटी को भी अपने राज्य में मिला लिया। इस प्रकार अपने राज्य की सीमाओं में भारी विस्तार

कर के हैदर अली वापस अपनी राजधानी श्रीरंगपट्टम लौट गया।

हैदर अली और मराठे - हैदर अली के बढ़ते प्रभाव एवं शक्ति से आतंकित हो कर पेशवा माधव राव ने 1764 ई० में मैसूर पर आक्रमण कर दिया। हैदर अली और मराठे के बीच सबनूर के दक्षिण में बलिहरी के युद्ध क्षेत्र में संघर्ष हुआ जिसमें पराजित होकर मार्च 1765 ई० में उसे मराठों के साथ संधि करनी पड़ी और संधि के अनुसार उसे मराठों को गुटी तथा बानूर के जिले और 32 लाख रुपये नकद भी देने पड़े।

1766 ई० में अंग्रेजों, मराठे और निजाम ने मिलकर हैदर अली के खिलाफ एक शक्तिशाली संघ बना लिया। वैसे तो हैदर अली अनपढ़ था किन्तु उसकी बुद्धि बड़ी विलक्षण थी। उसने इस त्रिगुट को भंग करने का प्रयास किया अतः मराठों को 35 लाख रुपये देने का आश्वासन प्रदान करके इस गुट से अलग कर दिया और 18 लाख रुपये नकद तथा शेष रुपये के बदले कोलार का जिला देकर मराठा सेना को वापस महाराष्ट्र भेज दिया।

मार्च 1769 ई० की एक संधि के

अनुसार अंग्रेजों ने वचन दिया था कि यदि कोई शक्ति हैदर अली पर आक्रमण करेगी तो अंग्रेज हैदरअली की सहायता करेंगे। इस संधि के कुछ समय बाद ही मराठों ने पुनः हैदर अली पर आक्रमण कर दिया। हैदरअली ने अंग्रेजों से सहायता माँगी, किन्तु उन्होंने कोई सहायता नहीं दी। अतः अंग्रेजों के इस विश्वासघात से हैदर अली उनका शत्रु बन गया।

हैदरअली ने मराठों के कुछ प्रदेश तथा कुछ रुपये नकद वापस लौटा दिया। इसके बाद मराठा मण्डल में आन्तरिक कलह पैदा हो गयी क्योंकि राघोबा ने अल्पवयस्क पेशवा नारायण राव की हत्या कर दी और स्वयं पेशवा बनना चाहता था। हैदर अली ने मौका देख कर इसका लाभ उठाया, उसने मराठों पर आक्रमण कर के उन सभी प्रदेशों पर अधिकार जमा लिया जो उसने मराठों को दिया था। उसने चितल दुर्ग, गुटी और बेलारी पर अपना अधिकार जमा लिया तथा कृष्णा एवं तुंगभद्रा नदियों के बीच के मराठा प्रदेशों को मैसूर में मिला लिया। अब मराठों ने हैदरअली को पराजित करने का प्रयत्न किया, किन्तु असफल रहे। अतः पेशवा के प्रधानमंत्री नाना फड़नवीस ने हैदर अली से मेल जोल बढ़ाने का प्रयत्न किया और अपना दूत हैदर अली के पास भेजा।

1780 ई० में नाना फड़नवीस और हैदर अली में एक समझौता हुआ। जिसके अनुसार, हैदर अली ने अँगरेजों को भारत से निकालने के प्रयत्न में मराठों को यथाशक्ति सहायता देने का वचन दिया। नाना फड़नवीस ने हैदर अली से वसूल की जाने वाली वार्षिक चौथ में भारी कमी कर दी।

द्वितीय आँग्ल - मैसूर युद्ध अभी समाप्त नहीं हुआ था कि दिसम्बर 1782 ई० हैदर अली की मृत्यु हो गयी।

—— X ——